

# Chhatrashakti

THE PREMIER STUDENT MAGAZINE

9

छात्रशक्ति

SEPTEMBER-OCTOBER 1996



● Celluloid Patriotism

● अनोखा 'प्रतिभा - संगम'

● Victory in Delhi and Goa Student Council Elections



## महाराष्ट्र के अमळनेर में अनोखा "प्रतिभा-संगम"



समारोप कार्यक्रम में भाषण करते हुए प्राचार्य अनिरुद्ध देशपांडे

"जग में कोई भी सर्वश्रेष्ठ चीज है तो वह मनुष्य का मन है। इस मन को कोई देश, प्रदेश, भाषा के बंधन में बांध नहीं सकता। मन का दुःख, आनंद, आशा आदि सब भावनाएँ समान होती हैं। ऐसा यह 'मन' सदियों से साहित्य का निरंतर विषय बना हुआ है।" ऐसा अ.भा.वि.प. द्वारा आयोजित साहित्य संमेलन के उद्घाटन भाषण में प्राचार्य राम शेवालकर ने कहा।

दि. २७, २८, २९ सितम्बर को महाराष्ट्र के जलगांव जिले के अमळनेर में विद्यार्थी-युवा साहित्यिकों का एक अनोखा साहित्य संमेलन "प्रतिभा-संगम" इस नाम से हुआ। इसमें विभिन्न जिलों से ४०० युवा साहित्यिकों के साथ, जाने-माने साहित्यिक, कवी, कथाकार और अन्य छात्र मिलाकर कुल १००० लोग सम्मिलित हुए।

### ग्रंथयात्रा

संमेलन की शुरुआत 'ग्रंथदिंडी' (ग्रंथयात्रा) से हुई। ग्रंथदिंडी के साथ लाये हुए दीप से प्रा. राम शेवालकर ने दीप प्रज्वलन किया। अ.भा.वि.प. के प्रान्त अध्यक्ष डॉ. विश्वासराव पाटील ने अ.भा.वि.प. शैक्षिक क्षेत्र के साथ ही राष्ट्रीय प्रश्नों के बारे में भी सक्रिय है ऐसा बताते हुए संक्षेप में विद्यार्थी परिषद का परिचय करवा दिया।

आज के इस साहित्य संमेलन से कल के साहित्यिक निर्माण होंगे ऐसी अपेक्षा अपने स्वागतपर भाषण में सांसद श्री. एम्. के. अण्णा पाटील ने व्यक्त की।

संमेलन के दूसरे दिन के सत्र में कवीवर्य श्री. मंगेश पाडगांवकर का साक्षात्कार प्रसिद्ध गीतकार श्री. प्रविण दवणेने तथा श्री. सुधीर मोघे का साक्षात्कार प्रा. जयंत कुलकर्णी ने करवाया। रात को बुने हुए विद्यार्थीयों ने अपनी रचनाएँ कवी संमेलन में पेश की।

### 'ज्ञानेश्वरी' का महत्व

तीसरे दिन श्री संत ज्ञानेश्वर के जीवन और साहित्य में होनेवाला सामाजिक आशय इस विषय पर परिचर्चा हुई। इसमें बोलते हुए डॉ. यशवंत पाठक ने कहा, "ज्ञानेश्वरी ने हमें किसी भी दुःखपर विजय पाने का सामर्थ्य तथा एक मनुष्य बनकर जीने का विवेक दिया। ज्ञानेश्वरी यह ग्रंथ वृद्धावस्था में नहीं बल्कि युवावस्था में पढ़ने लायक है।" दोपहर के कार्यक्रम में विनोदी लेखक श्री ट. मा. मिराजदार और विज्ञान कथाकार सौ. रेखा वैजल का साक्षात्कार सौ. सुप्रिया अने द्वाग किया गया।

इसके बाद कथा, कविता, विनोदी साहित्य और वैचारिक लेख इन चार प्रकारों में जो साहित्य आया था उसका पाठ्यक्रम

करके हर एक प्रकार में पुरस्कार दिये गये।

### साहित्य में समाज तथा राष्ट्र का विचार आवश्यक

कार्यक्रम के अंत में प्रमुख अतिथी मशहूर सिने दिग्दर्शक श्री. राजदत्तजी का भाषण हुआ। अपने भाषण में उन्होंने वहाँपर उपस्थित युवा साहित्यिकों को देखकर आनेवाला भविष्य निश्चितही आशा तथा उत्साहवर्धक होगा ऐसा कहा। समारोप भाषण में विद्यार्थी परिषद के ज्येष्ठ कार्यकर्ता तथा पुणे के बी. एम. सी. कॉलेज के प्राचार्य श्री. अनिरुद्ध देशपांडे ने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में आज हर एक क्षेत्र में परिवर्तन की आवश्यकता है ऐसा बताते हुए आज और कल के साहित्यिकों ने समाज तथा राष्ट्र का भी विचार करने की आवश्यकता पर जोर दिया। वंदेमातरम् से संमेलन का समापन हुआ।

युवा साहित्यिकों का उत्साह बढ़ानेवाला, उनके एक दिशा देनेवाला, प्रसिद्ध साहित्यिक, कवी, कथाकारों के साथ युवा साहित्यिकों को समान मंच पर लानेवाला, अभी तक का एक मात्र और अनोखा ऐसा 'प्रतिभा-संगम' उत्साह के साथ संपन्न हुआ। अ.भा.वि.प. के द्वारा साहित्य जैसे अलग क्षेत्र में किये गये इस प्रयास की सभी जगह सराहना हो रही है।



## EDITORIAL....

### Punch



A fridge, A.C. fan, sofa sets, carpets being taken into the next cell. Some VIP is moving in there, I think?

Courtesy : The Times Of India

मुख्यपृष्ठ : 'प्रतिभा-संगम' में मार्गदर्शन करते हुए दिग्दर्शक श्री. राजदत्त

### Editorial Desk

V. Muraleedharan  
Sharadmani Marathe  
V. Sangeetha  
Prachi Moghe  
Shreerang Kulkarni

The 13 Member coalition ministry at the center has survived its 100 days in power, contrary to expectations. Though it deserves credit for sheer survival instinct, it has got mired into various unseemly controversies. The latest and probably the worst of these is invoking Article 356 of the Constitution in Gujarat. This action of the UF, using the constitution for political gains has been roundly condemned by all, and shows that the UF is no better than the Congress, when it comes to indiscriminate use of Constitutional provisions.

But is it better than the congress in any other way? The way the telecom scandal has dragged on is a pointer to the insincerity of the government in bringing to book those guilty of serious corruption charges. Worse is the manner and frequency in which Gowda has paid personal visits to the utterly discredited former PM Narsimha Rao no less than 24 times in 3 months! Can the present PM, so utterly dependant on the corrupt congress for support in the Lok Sabha take any stringent action against its members? The signal that has reached the people is exactly the opposite. The UF will even shield corrupt politicians to stay in power. So much so that it seems like defacto Congress Rule.

How else can the staging of the meaningless 'Miss World' pageant in the home town of the PM be explained? It is an open invitation to the multinationals to assault and loot the common customer through their high profile advertisements and to enhance their profits at the cost of the hapless Indian consumer. So much for the coalition's commitment against capitalists.

With the Home Minister himself unaware of many ground realities and regional bosses like Karunanidhi, Mahanta, Naidu wanting to constantly exert pressure on their representatives in government, the ministry seems in a state of confusion and chaos. But we expected nothing more out of a coalition that never existed before the results of the Lok Sabha were announced and came together for the sole purpose of gaining power.

It will be a shame and a disgrace, if the cost of its survival comes in the form of open flouting of constitutional norms and shielding corrupt politicians and officials.



# 'GOPIO' पर्यटन का अवसर प्रदान करनेवाला मंच न बने।

श्री. हरेंद्रकुमार पाण्डे

जबल ही में अगस्त के आखरी सप्ताह में गोपियों का चौथा सम्मेलन मॉरिशस में हुआ। 'गोपियों' क्या है? उसके उद्देश्य तथा गतिविधियाँ क्या हैं? मॉरिशस के सम्मेलन में क्या हुआ? इसके बारे में हमारे संपादक और अभाषिण के उत्तरमध्यांचल के क्षेत्रीय संगठनमंत्री श्री. हरेंद्रकुमारजी के बीच हुई बातचीत -

**"गोपियों" का मतलब क्या है? इसकी स्थापना कब हुई तथा इसके उद्देश्य क्या हैं?**

"गोपियों" का मतलब है, Global Organisation of People of Indian Origin इसकी स्थापना १९८९ में अमेरिका में हुई। विश्वभर में फैले २ कोरड से अधिक भारतीय मूल के लोगों को संगठित कर उन्हें भारतीय संस्कृति से जोड़े रखना इसका प्रमुख उद्देश्य है।

**आजतक गोपियोंके कितने सम्मेलन हुए? गोपियोंके प्रमुख कौन हैं? इसका मुख्यालय कहाँ पर है?**

यह गोपियों का चौथा सम्मेलन था। पहला सम्मेलन न्यूयार्क में, दूसरा पेरिस में तथा तिसरा मॉन्ट्रियल में हुआ। गोपियों का अगला सम्मेलन १९९८ में दक्षिण अफ्रिका के डरबन में होने जा रहा है। १९९७ में "एशियन गोपियों सम्मेलन" काटमांडो में होगा। गोपियों का मुख्यालय 'मॉरिशस' घोषित हुआ है तथा श्री. धनदेव बहादुर (मॉरिशस) इसके अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गये हैं।

**मॉरिशस के सम्मेलन में सहभागी देश तथा प्रतिनिधियोंकी कुल संख्या कितनी थी?**

मॉरिशस सम्मेलन में कुल १२ देशों से ५०६ प्रतिनिधि आये थे जिसमें सबसे अधिक मलेशिया से थे।

**विदेश में बसे 'भारतीयों' के मन**

**में आज भारत का क्या स्थान है?**

विदेश में बसे भारतीयोंके मन में भारत के प्रति गहरा लगाव है। भारतीय संस्कृति ही उनकी विरासत है और इसपर उन्हें गर्व भी है। वे चाहते हैं कि उनके बच्चे भारतीय संस्कृतिसे जुड़े रहे। नयी पीढ़ी पर पाश्चात्य जीवन का प्रभाव बढ़ रहा है अतः वे अपने बच्चों को भारत में रखकर उच्च शिक्षा देना चाहते हैं।

**भारत में चल रहे आर्थिक घोटाले तथा राजनीति के अपराधिकरण के बारे में उनका क्या कहना है?**

अपराधियों के राजनीतीकरण एवं सत्ता के सर्वोच्च स्थानपर पनप रहे भ्रष्टानार से वे चिंतित तो हैं पर भाजपा एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की मदती हुई शक्ति से वे आशाान्वित भी हैं।

**मॉरिशस में तीन दिन हुए सम्मेलन के विषय क्या थे?**

मॉरिशस सम्मेलन में विदेशों में रहनेवाले भारतीय लोगों की आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक स्थिति, उनकी भारत से अपेक्षाएँ, Me & My Origin आदि विषयों पर व्यापक चर्चा हुई। सम्मेलन में एड्डा पर भारतद्वारा हस्ताक्षर नहीं करने का स्वागत किया गया तथा भारत की भूमिका की प्रशंसा कि गयी। दक्षिण अफ्रिका की संघर्ष में भारत एवं भारतीय मूल के लोगों की भूमिका की सबने सराहना की। फिर भी उनके मन में बर्मा, हांगकांग एवं फिजी की घटनाओं के कारण तो यह भय बना हुआ है कि पता नहीं कब उन्हें उनके देश से निकाल दिया जाये।

**परदेशस्थ भारतीयों का वहाँपर क्या स्थान है? तथा भारत से उनकी क्या अपेक्षाएँ हैं?**

परदेशस्थ भारतीय सम्मानजनक स्थान तो प्राप्त कर रहे हैं पर वे अपने मूल से

कटते भी जा रहे हैं क्योंकि भारतीय संस्कृति में बनाये रखने में जो सहयोग भारत से अपेक्षित है वह उन्हें मिल नहीं रहा है। आर्थिक दृष्टि से सशक्त होने के साथ साथ अब वे अपनी राजनैतिक हैसियत भी प्राप्त करना चाहते हैं।

**'गोपियों' का उद्देश्य किस हद तक सफल हो रहा है?**

गोपियों के स्थापना के पीछे यह भाव ही ज्यादा है कि हम हक संगठित शक्ति के रूप में खड़े हो एवं भारत को हम शक्तिशाली बनाये तथा विपत्ती में भारत हमारे साथ खड़ा हो। कुल मिलाकर गोपियों के प्रयासों की सराहना करनी चाहिए लेकिन आगे जाकर यह केवल पर्यटन का अवसर प्रदान करनेवाला मंच बनने का खतरा दिखाई देता है। विशेष रूप से भारत से जानेवाले लोगों के बारे में यह भाव अधिकतर दिखाई दिया।

**मॉरिशस में भाषा की तथा अन्य कोई मुसिबत आपने महसूस की?**

मॉरिशस में ज्यादातर भोजपुरी भाषा चलती है। जो मुझे अच्छी तरह से आती थी। पीने के पानी की थोड़ी समस्या ऐसी थी की बहुत बार पीने के पानी के बजाय पेप्सी जैसा थंडा पेय ही मिलता था। इससे औरों को शायद कम लेकिन मुझे बहुत मुसीबत हुई। बाकी कुल मिलाकर सब अच्छा रहा।

ऐसे ही 'गोपियों' अगर उद्देश्यों के प्रति अधिक सजग रहकर गंभीरता से प्रयास करें तो विदेशों में फैले-बिखरे इस शक्ति को सम्मान प्राप्त होगा एवं उस शक्ति से भारत लाभान्वित हो पायेगा ऐसी आशा भी अंत में उन्होंने प्रकट की।



## FIFTY YEARS OF INDEPENDANCE AN APT MOMENT FOR RETROSPECTION

At the stroke of midnight on 15th Aug. this year, India entered the Golden Jubilee phase of her independent age. Much water has passed through the river Yamuna since 15th August, 1947, the day on which India became independent. Ramparts of Red Fort in New Delhi were witness to this glorifying event, which saw the descent of union jack and the ascension Indian tricolour on the mast atop it. But since then things have changed from bad to worse. Successive Prime Ministers who made tall claims and hefty promise on the Independence day every year from the precincts of Red Fort, in their bid to revamp and streamline the nation failed miserably to deliver goods. Their vaunts not only proved to be hollow and porous but also vanished in thin air, after the speech. When India became free, spirits were high, expectation even higher and commitments of the people towards nation the highest. For it was after a long and gruelling struggle against imperialism that India had gained freedom. Many languished years together behind bars and umpteen number of people lost their loved ones in this crusade against tyrannical rule. Although pangs of partition were hard to

digest, people accepted it, as the inevitable had happened. It was a prize catch, of which we as a nation failed to make optimum use and the result; even after half a century of Independence, majority of our population are grappling to gain access to basic human amenities.

If scrupulous scrutiny of past is done, it would mean washing our dirty linen in the public and as also it would imply the stirring up of the hornet's nest. *De facto* India has not been able to solve the Kashmir tangle to date is not only a matter of shame but also a matter of grave concern. It seems that we being a nation as much as '7' times larger than Pakistan, are not able to combat and squelch the low cost proxy war initiated by Pakistan in Kashmir. Candidly speaking even if that minuscule Israel would have been in India's place, Pakistan would have been taught the lesson of its life to the extent of wiping it from the world map. But we Indians are very liberal and highly compromising, even if it would mean sacrificing the ethical values and principles at the altar of national security.

### Population Problem

Population is increasing at an alarming pace and that too disproportionately. As of now

India is at No. 2 position, next only to China, but population pundits say it would not be long enough before India scrapes past China atleast in this sphere, although not in the other competitive fields. Since Independence our population has increased two fold. Little or no efforts were initiated to decelerate the population growth all these years and now even at this eleventh hour, this issue is not being dealt with seriously. Maximum co-operation from the print and electronic media can be sought in this matter, otherwise it may well see us as a nation spreading our tentacles with bowls begging for crumbs. One of the reason why the crime rate is growing day in and day out is unemployment. Although population has increased, job opportunities have not increased at the same pace. This has resulted in youth resorting to terrorism, fraudulent behaviour, drug abuse. Production of talented individuals from some of the nation's premier educational institute have seen the phenomenon of Brain drain catching up of late, due to non availability of facilities over here. Generation of employment opportunities should be done on war footing so that we find some

cont. on page no. 11



## 3 DIE IN GRUESOME MURDER IN KERALA CAMPUS.



Shri V. Muraleedharan, National General Secretary ABVP, paying homage to the mortiers.

The ideological clashes between the CPM sponsored student's Federation Of India (SFI) Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad activists, took a violent turn in Parumala near Mannar (Kerala) on the 17th of Sept. 1996. Three young ABVP activists aged between 16-20 years died a brutal death as a result.

Armed SFI activists along with non students attacked the unarmed ABVP activists who had no choice but to flee for their lives.

The ABVP activists jumped in the Pampa river in a bid to escape the attack. The activists who knew swimming were not allowed to surface from under the water by the armed SFI goons, who pelted stones, bricks whenever the ABVP activists attempted to surface.

Women, who were bathing in the river tried to help the ABVP activists, were threatened by the armed hooligans. The ABVP activists suffocated under water to a gruesome death.

The post-mortem of the three students-P.S.Anu, Sujith, Kim Karunakaran- was conducted at Kottayam medical college. The bodies were then taken to the Devaswom Board college where the activists studied and the gory crime took place. Hundreds of people paid their last respects to the departed souls on the 10 km. long route from Thiruvalla to the D.B. College.

While a large number of students gathered in the college to pay their homage to their departed friends, they did not allow the police or the Principal of the college Ms. Bhanumathi Amma, whose timely

intervention could have easily averted the unfortunate incident, to enter the hall where the bodies were kept.

The repercussions of the gory incident were felt in the Kerala State Assembly, where the opposition staged a walkout over the callous attitude of the CPM government to wards the killing episode. The ABVP has now demanded that the Home Ministry be taken away from the CPM in view of the growing violence in the state. The demand is gaining momentum as the opposition is giving it a serious thought.

The murderous attack on the ABVP activists comes after a gap of 15 years following the support of ABVP increasing in leaps bounds in recent times.



# बिहार में 'परिसर बचाओ' आन्दोलन

आज बिहार का शिक्षा क्षेत्र संकट के दौर से गुजर रहा है। अराजकता, अनियमितता एवं भ्रष्टाचार से ग्रस्त आज बिहार का शिक्षा क्षेत्र संकट के दौर से गुजर रहा है। अराजकता, अनियमितता एवं भ्रष्टाचार से ग्रस्त राज्य की उच्चतर शिक्षा की बदहाली वस्तुतः १९७७ से प्रारंभ हुई। तत्कालीन कर्पूरी ठाकुर की जनता पार्टी की सरकार ने छात्र समुदाय के बीच सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए विश्वविद्यालयीन परीक्षाओं में कदाचार की खुली छूट प्रदान कर शिक्षा क्षेत्र की पवित्रता को ही नष्ट कर दिया। अस्सी के दशक में राज्य के विश्वविद्यालय शैक्षणिक अराजकता के दलदल में पूरी तरह से लिप्त हो गए।

## शैक्षिक अराजकता

महाविद्यालयों में शिक्षकों की कमी, विश्वविद्यालय द्वारा प्राध्यापकों को उनके पूरे वेतन का भुगतान नियमित न कर पाना, महाविद्यालय परिसरों में अध्ययन व अध्यापन का घटता हुआ शैक्षिक परिवेश तथा परीक्षा संचालन एवं परीक्षाफल प्रकाशन की अनियमितता एवं अनिश्चितता ने विश्वविद्यालय के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न खड़ा कर दिया। परन्तु इन तमाम विसंगतिओं के बावजूद राज्य में स्वस्थ शैक्षणिक माहौल के लिये अ. भा. वि. प. की छात्र परिषद द्वारा चलाया गया परिसर बचाओ आन्दोलन तथा दिसंबर ९५ को माननीय पटना उच्च न्यायलय द्वारा कदाचार रहित परीक्षा संचालन के लिए राज्य सरकार तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों को दिये गये कठोर निर्देश के फलस्वरूप राज्य के उच्चतर शिक्षा में सुधार के लक्षण दिखाई देते प्रतीत हो रहे हैं।

शैक्षणिक कैलेंडर का प्रकाशन करने, विश्वविद्यालयीन सत्रों को नियमित करने, वर्ष में कम से कम १८० दिन पढ़ाई की व्यवस्था सुनिश्चित करने तथा परीक्षाओं में व्याप्त कदाचार को दूर करने जैसे अ. भा.

विद्यार्थी परिषद द्वारा उठाई गई मांगें आज बिहार में साधारण छात्रों की मांगें बन चुकी हैं, तथा प्रान्तभर में उपरोक्त शैक्षणिक सुधार के लिये एक बहस तथा प्रयास प्रारंभ हुआ है। माननीय पटना उच्च न्यायलय द्वारा कदाचाररहित परीक्षा संचालन हेतु दिये गए कठोर निर्देश तथा निगरानी के परिणामस्वरूप परीक्षाओं की गिरती हुई साख वापस आई है। अ. भा. वि. प. द्वारा परिसरों में चलाये गए शैक्षणिक आन्दोलन का परिणाम रहा कि महाविद्यालयों में पढ़ाई नहीं होने के बावजूद छात्रों ने कदाचार मुक्त परीक्षा संचालन का विरोध नहीं किया।

## नकल के खिलाफ

अब तो स्थिति यह है कि राज्य में कदाचाररहित परीक्षा संचालन करने का आग्रह करनेवाला छात्र संगठन के रूप में अ. भा. वि. प. की छात्र बान चुकी है। १९७८ से जब बिहार के विश्वविद्यालयीन परीक्षाओं में नकल की खुली छूट थी, उस समय अ. भा. वि. प. द्वारा नकल के खिलाफ चलाया गया आन्दोलन केवल नर्चित रहा बल्कि इससे परिसरों में छात्रों के बीच सकारात्मक प्रभाव भी पड़ा। आज राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कई कुलपति सार्वजनिक तौर पर इस बातको स्वीकार करते हैं कि परिषद द्वारा परिसरों में नकल के खिलाफ बनाए गए वातावरण के कारण ही विश्वविद्यालय प्रशासन को परीक्षाओं में कदाचार रोकने में सफलता मिली।

## छात्र आंदोलन का स्वर्णिम इतिहास

यू तो बिहार में छात्र आन्दोलन का एक स्वर्णिम इतिहास रहा है। १९७४ में लोकनायक जयप्रकाशनारायण के नेतृत्व में चले छात्र आन्दोलन ने प्रकाश में सम्पूर्ण देश को एक नई दिशा दी। परन्तु १९९४ का परिषद द्वारा चलाया गया 'परिसर बचाओ आन्दोलन' न केवल प्रान्तभर के

छात्रों को परिसर से सड़क तक शैक्षणिक सुधार के लिये संघर्ष करने हेतु प्रेरित किया बल्कि शिक्षा क्षेत्र के गलियारों में शैक्षिक सुधार के एक सार्वक व रचनात्मक बहस को जन्म दिया। परिसर बचाओ आन्दोलन ने विभिन्न शैक्षणिक समस्याओं के सुधार हेतु बड़े पैमाने पर संघर्ष करने के लिये छात्रों को गोलबंद किया।

२५ जनवरी ९४ का बिहार विधानसभा, पटना के समक्ष पचास हजार से भी अधिक छात्रों का प्रदर्शन, २९ जनवरी का अ. भा. वि. प. द्वारा आहूत बिहार बंद की व्यापक सफलता तथा इसके पूर्व राज्य के लगभग सभी अंगीभूत महाविद्यालयों के शैक्षणिक समस्याओं को लेकर हुए व्यापक सर्वेक्षण एवं महाविद्यालय स्तर पर हुए कुछ निर्णायक आन्दोलनों के परिणामस्वरूप राज्य सरकार को शिक्षा के प्रति उदासीन रूख को त्यागने हेतु विवश होना पड़ा। १९७४ आन्दोलन से ऊपजे श्री. लालू प्रसाद से शिक्षा क्षेत्र को उम्मीद बनी थी कि सरकार शैक्षणिक समस्याओं का त्वरित समाधान कर राज्य में स्वस्थ शैक्षणिक वातावरण बनाने में कारगर कदम उठाएगी। परन्तु लालू सरकार के समय बिहार में शिक्षा की जितनी दुर्गति हुई, संभवतः आजादी के बाद और किसी सरकार ने शिक्षा क्षेत्र के प्रति इतना उदासीन रूख नहीं अपनाया।

## सत्रों में सुधार

१९९४ में चलाए गए परिसर बचाओ आन्दोलन तथा उसके पश्चात् अ. भा. वि. प. की विभिन्न इकाईयों द्वारा विभिन्न शैक्षणिक मुद्दों पर किए गए निरंतर आन्दोलन के कारण विश्वविद्यालयीन सत्र नियमित होने लगे हैं, जहाँ दो वर्ष पूर्व सत्र तीन साल तक विलम्ब से चल रहे थे। अधिकांश विश्वविद्यालयों में शैक्षणिक कैलेंडर प्रकाशित हुए हैं। कदाचाररहित



परीक्षाओं का संचालन हो रहा है। वर्षों से रिक्त पड़े शिक्षकों के रिक्त स्थानों पर नियुक्तियों की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। इसी वर्ष ९ जुलाई से १५ जुलाई तक राज्य के सभी जिला केन्द्रों पर वर्ष में कम से कम १८० दिन की पढ़ाई की व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु अ. भा. वि. प. के पहल पर महाविद्यालय परिसरों में संगोष्ठियों का आयोजन किया गया। जिसमें बड़े पैमाने पर छात्र, शिक्षक एवं प्राचार्य सम्मिलित हुए।

शिक्षा क्षेत्र की आकांक्षाओं पर कुठाराघात करनेवाली भ्रष्टाचार में आकट हुवी लालु सरकार विगत पांच वर्षों से शिक्षकों के वेतन का नियमित भुगतान करने की व्यवस्था न कर सकी। १९८१ से विश्वविद्यालय के छात्रसंघों के चुनाव नहीं हुए। महाविद्यालय परिसरों से सहगामी प्रक्रियायें विलुप्त होती जा रही हैं। मेधावी तथा अनुसूचित जाति

व जनजाति छात्रों के छात्रवृत्ति का नियमित भुगतान करने में सरकार असमर्थ है।

### सकारात्मक परिणाम

परिसर बनाओ आन्दोलन ने शैक्षणिक बदलाव के लिये परिसरों में जो दबाव उत्पन्न किया है, उसके सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। परिसर में नियमित अध्ययन-अध्यापन के प्रति सामान्य छात्र सजग होने लगे हैं। परीक्षाओं की पवित्रता व विश्वसनीयता वापस आने के कारण छात्र अध्ययन के प्रति गंभीर होन लगे हैं। दसवीं व बारहवीं कक्षाओं के परीक्षाओं के परीक्षाफल निश्चित समय पर प्रकाशित होने लगे हैं। अब परिसरों में स्वस्थ शैक्षणिक माहौल की स्थिति बन रही है।

उपरोक्त सकारात्मक पहलुओं के बावजूद आज राज्य के विश्वविद्यालय विभिन्न अराजकता व कृष्यवस्था से लिप्त है।

जातिवाद, गुण्डागर्दी एवं पाशात्य संस्कृति की विवृत्तियों ने विश्वविद्यालयों के शैक्षिक माहौल को प्रदुषित किया है। प्राचार्य, कुलपति एवं अन्य प्रशासनिक पदाधिकारियों की नियुक्तियोंका मापदण्ड आज जाति, पैसा व दलगत राजनीति बन गया है। राज्य की तकनीकी शिक्षा आज सरकारी उदासीनता का पर्याय बना हुआ है। पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला अर्थाभाव के कारण अनाकर्षण के केन्द्र बने हुए हैं।

ऐसी परिस्थिति में राज्य के शिक्षा क्षेत्र को शैक्षणिक अराजकता के दलदल में ऊबारने के लिये परिसरों में निरंतर सफाई करने की जरूरत है। साथ ही स्वस्थ परिसर संस्कृति के विकास हेतु एक सार्थक कदम प्रारंभ करना पड़ेगा, तभी बिहार की खोई हुई शैक्षणिक गरिमा पुनः वापस आ सकेगी।

-प्रा. दिनेशनंद गोस्वामी



पाटण में १५ अगस्त के ध्वजवंदन कार्यक्रम में सम्मिलित लोग

### पाटण शाखाद्वारा उत्कृष्ट ध्वजवंदन कार्यक्रम

२६ जनवरी तथा १५ अगस्त को ध्वजवंदन समारोह में महाविद्यालयों में आधिकारिक छात्रों की उपस्थिती हो इस विषय में देशभर के कई शाखाओंद्वारा स्थानीय जगहपर ऐसे प्रयत्न होते हैं। इस १५ अगस्त को ऐसा ही एक प्रेरणादायी

ध्वजवंदन कार्यक्रम गुजरात प्रांत के पाटण शाखाद्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में कुल २५०० लोग सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम में अध्यक्षस्थान के नाते पाटण मतक्षेत्र के सांसद श्री. महेशकुमार कनोडिया ने तिरंगा फहराया। मुख्य अतिथी के रूप में उपस्थित श्री. जितेंद्रकुमार पन्नेलीने (प्रिंसिपल, कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, पाटण) परिषद

के इस लोकजागृती के प्रयत्न की सराहना की। अ. भा. वि. प. के प्रांत उपाध्यक्ष श्री. कलेशभाई जोशीने अपने जोशीले भाषण में स्वतंत्रता दिन की स्वर्णजयंती के अवसरपर पुनः आत्मनिरीक्षण पर जोर दिया। अंत में पाटणशाखा के अध्यक्ष प्रा. डॉ. चंपकभाई मोदीने आभार प्रकट किया।



## THE BRUTAL LATHI CHARGE ON 'VIRAT' RALLY AT HYDERABAD.

More than 100 people were injured as a result of police lathi charge & trained water cannons on Virat Rally organised by ABVP in Hyderabad to highlight the problems of students of weaker section.

On the 6th August more than 10000 ABVP workers all over the state were gathered near the Telugu Talli statue around 1.00 p.m. The activists were demanding the government to release enhanced scholarships for SC, ST, BC, & EPP (economically poor person), appointment of teachers in government & aided institutions, strict implementation of the ban on private tuitions by government teachers, reduction of bus pass fare & on inquiry into the misuse of funds in the polytechnic & social welfare department.

The gathering wished that the Chief Minister Chandrababu Naidu come down to listen to the grievances of the students. The demand was not paid any heed to, on the contrary the police cane charged the students & water cannons were used freely. More than 400 workers were arrested. ABVP national secretary P. Chandra shekhar & joint secretary Suryanarayana were among those who were taken into custody.

ABVP national secretary P. Chandrashekhar condemn the brutal lathi charge by police on rally progressing peacefully with out any provocation.

## गोवा विश्व विद्यालय के छात्रसंघ चुनाव में अ. भा. वि. प. विजयी



चुनाव जितने के बाद आनंद मनाने हुए विद्यार्थी और उपर कोने में अध्यक्ष सर्वेश खरगटे तथा सचिव विशाल देसाई

३० अगस्त को हुए गोवा विश्वविद्यालय के छात्रसंघ चुनाव में अध्यक्ष, सचिव तथा छात्र प्रतिनिधी आदि महत्वपूर्ण पदों पर विद्यार्थी परिषद के उम्मीदवार विजयी हुए। इसके साथ ही अ. भा. वि. प. के ६ में से ४ सदस्य भी चुनाव में जीते।

अ. भा. वि. प. के अध्यक्ष श्री सर्वेश खरगटे, जो कि मडगांव के दामोदर महाविद्यालय के छात्र है एक अच्छे क्रीडापटु तथा उत्कृष्ट एन्. सी. सी. कैंडिडेट है। अध्यक्षपद के चुनाव में उन्होंने नॉर्मल आलेखन समर्थित इन्डिपेन्डन्ट स्टुडेंट्स युनियन (आय्. एस्. यु.) के रोड्राविन कुहिन्हो का ७ मतों से पराभव किया। सचिव श्री विशाल देसाई ने आय्. एस्. यु. के विजय भिक्के को ९ मतों से पराजित किया। श्री विशाल देसाई कुवकली के सी ई एम् कला और वाणिज्य महाविद्यालय के छात्र होने के बावजूद एक अच्छे खिलाडी भी है। साखली के सरकारी

महाविद्यालय की छात्रा कु. पेंसी पिटी छात्रा प्रतिनिधी के स्थानपर अवरोध जीत गयी। छात्रसंघ के सदस्य के रूप में श्री विनय बापट, श्री मशार्डिस फर्नांडिस, श्री. सागर शेट्टे तथा श्री. विलास परब चुनाव जीते।

चुनाव जीतने के लिये आय्. एस्. यु. तथा एन्. एस्. यु. आदि जैसे विद्यार्थी संघटनों ने उम्मीदवारों को आकृष्ट कर पुरस् देने की कोशिश की लेकिन विद्यार्थी परिषद के सभी विद्यापीठ प्रतिनिधीयों ने यह काम नाकाम कर दी।

विजयी अध्यक्ष श्री. सर्वेश खरगटे ने ज्यादा शैक्षिक सुविधा प्राप्त करा देने के साथ-साथ छात्रों की सभी समस्याएँ हल करने की इच्छा व्यक्त की। फिर एक बार विद्यार्थी परिषद ने छात्रसंघ चुनाव जीतनेपर प्रतिक्रिया देते हुए गोवा प्रदेशमंत्री श्री विनय बापट ने कहा कि गुंडागर्दी और आर्थिक खराबोशोषण ज़रूरतमंद जो यह विजय है।



## “विदर्भ में शैक्षिक समस्या शोध यात्राओं को अच्छी सफलता”

२० अगस्त से ७ सितंबर तक विदर्भ प्रदेश में नागपुर विद्यापीठ और अमरावती विद्यापीठ क्षेत्र में दो अलग-अलग ‘शैक्षिक समस्या शोध यात्राएँ’ चली। स्थानीय जगह पर महाविद्यालयों की छोटी-छोटी समस्याओं को दृढ़ निकालने के साथ ही उनको सुलझाने का प्रयास भी इसमें किया गया।

दोनों यात्राएँ अपने विद्यापीठ क्षेत्र के महाविद्यालयों में गईं। महाविद्यालय में जाने के बाद विद्यार्थी, प्राध्यापक, प्राचार्य तथा कर्मचारियों को इकट्ठा करके ‘रूख अदालत’ में प्राचार्यद्वारा छात्रों के प्रश्नों का समाधान किया गया। इसमें प्रश्न निकालने के लिये पहले ही महाविद्यालयों में सर्वे किये थे। प्रश्नालयों से किताबों का उपलब्ध न होना, पीने के पानी की समस्या, फी लेने के बाद भी खेलकूद का सामान न होना, अनेक विषयों के लिये प्राध्यापक ही न होना साथ ही नियुक्त प्राध्यापकों ने लेक्चर्स न लेना, महाविद्यालयीन कर्मचारियों का बुरा बर्ताव, सायकल स्टैंड जैसे कई महत्वपूर्ण प्रश्न छात्र अदालतों में उठाए गये। हर एक महाविद्यालय में छात्र अदालत के लिये छात्राओं का उत्साहपूर्ण सहभाग भी महाविद्यालयों में छात्राओं की सजगता का एक उदाहरण था।

छात्रों के अच्छे प्रतिसाद के साथ साथ प्राचार्यों का भी इस यात्रा के लिये अच्छा सहयोग रहा। प्राचार्यों ने स्वयं छात्र अदालतों में उपस्थित रहकर प्रश्नों के उत्तर दिये। कुछ प्रश्नों को वहीं पर सुलझाया तथा कई प्रश्न सुलझाने का आश्वासन दिया। प्राचार्यद्वारा दिये गये आश्वासनों के अनुवर्तन के लिये कई महाविद्यालयों में छात्रों की समिती गठित की गयी है।

इन यात्राओं के द्वारा महाविद्यालय कौमस की समस्याओं को सबसे सामने लाने में तथा शैक्षिक परिवार के सदस्य विद्यार्थी, प्राचार्य, प्राध्यापक इनके बीच सहकार्य की भावना को बढ़ावा देने में अ. भा. वि. प. को सफलता मिली है ऐसा विश्वास विदर्भ प्रदेश में सभी जगहपर व्यक्त हो रहा है।

## 42nd National Conference at Bangalore.



Vice-chancellor of the Bangalore University Dr. N.R.Shetty lighting the lamp to inaugurate the Conference Office at Bangalore

Pioneering the student's movement for around five decades, ABVP is holding its 42nd National Conference at Bangalore from 22nd to 25th November 1996. There would be around 3000 delegates from various disciplines from all parts of the country.

Reception Committee has been formed. The names of outstanding personalities who adorn the committee are Honorary Chairman Dr. N.R.Shetty (Vice-Chancellor Bangalore University), Chairman: Capt. V.V.K. Mani (Regional Manager, The Hindu) General Secretary: Mr. Nanu R. Mallya etc.,

The opening of Conference Secretariate was done by Dr.N.R. Shetty (V.C. Bangalore University), the honorable

chairman. The working of well equipped office with facilities like separate telephone, fax, computers etc., has already started. The steering committee of 7 important workers has been formed for planning, supervising co-ordination the entire proceedings. The committee meets every monday to take stock of the progress in the arrangements.

61 departments have been identified based on the nature of tasks. Various departments had already started their work as there was crash campaign all over the state between 1st to 8th September, 1996 to collect Rs.300/-from 3000 people.

The National High School grounds in Basavanagudy have been identified as venue.



from page no. 5

solace in our venture to curb the criminal attitudes.

### **Economic Scenario**

As regards economic scenario, the less we talk the better. The fact that a newborn child in India has got a loan of 7500/- on its head reflects the poor management of financial affairs in India. To make the matter worse, United States is leaving no stone unturned in its aid to convert India into a Banana republic by issuing veiled strictures through IMF and World Bank. Special 301, Super 301 and trade sanctions are only a few of such threats. In these days if you turn the pages of Newspapers, then you are sure to lay your eyes on atleast one corruption scandal. The tenure of last but one government could rightly be called the scam raj. Not only has been many a skeletons fished out from the cupboard, but also the political career of many of them is on tenterhooks. This termite of corruption has infested every section of public life and it is one of the many thorns in the flesh for us Indians. In the day to come, a special court should be set up to deal with an iron hand the misappropriation of funds from public exchequer. No person however tall he is should be allowed to escape from the hands of law.

### **Communal Politics**

Communal virus is raising its ugly head very now and then and its clone the disease of casteism is working overtime to

ravish the fabric of our diverse culture. Appeasement of minorities or minority baiting may have resulted in India facing such a problem which at times stalls the all too slow development process. There is a popular adage which says that "politics is the last resort of a scoundrel", but nowadays it seems to have become the first.

On the sports front, ours has been a march from bad to worse and from worse to worst. We, as a nation winning medals at the games of interational calibre has become a thing of the past. India's Leander Paes's bronze streak at the recently concluded Atlanta Olympics provided some succour in putting an end to the medal drought dogging India.

### **Task of Reconstruction**

For the citizens of this vast nation, the task ahead is uphill but not impossible. An apt way of celebrating this rather too rare occassion will be to blend introspection and retrospection and realising the onus history has bestowed on us, try to inch the nation towards self sufficiency on all fronts. Thoughts honed by nationalistic feelings should be uppermost in our mind in this sacred endeavour. May be history will not provide such an opportunity again.

- Sudhir R. Pai

### **Lathi-charge on ABVP Rally at Bhubaneshwar**

About 100 students were injured in a brutal lathi-charge

by R.P.F & C.R.P.F. in front of the gate of the state Assembly of Orissa.

Hunderds of ABVP activists marched towards 'Vidhan Sabha' to protest against the go slow attitude of the government to the various demands of the students concerning +2 examination. For last two months ABVP leaders have been making efforts to solve the problems of C.H.S.E. through various meetings, discussions with minister, but in vain!

As a result of this, agitating students went in a rally and asked the minister to come out of Vidhan Sabha to meet the students and satisfy their demands being :-

1) To publish the report of one man commission which was setup to enquire into the leakage of question paper.

2) To setup a judicial enquiry int the entire process of printing of question paper to publication of results.

3) To declare the merit of +2 science examination.

When the minister refused to come out to meet students, the agitated students entered into the premises of Vidhan Sabha forcefully which led to the lathi-charge. Nine student leaders including Trinath Sahoo, State Secretary ABVP, were hospitalised. Besides 400 students were injured.

The State Unit of ABVP condemned such barbaric repression of the demands of the students and demanded the resignation of the minister of Higher Education and the minister of Schools Mass Education.



## ABVP : Clean Sweep in DUSU



From left to right : DUSU Vice-President Anil Jha, President Rekha Jindal and Secretary Surinder Goel

ABVP bagged three important posts in Delhi University Student Union (DUSU) elections held on September 13, 1996. Rekha Jindal, Anil Jha, Surinder Goel have been elected as President, Vice-President, Secretary respectively. While NSUI won the post of Joint Secretary. Rekha Jindal defeated her nearest rival Priya Gupta of NSUI by margin of 2,902 votes. Anil Jha won by defeating his nearest rival of the NSUI by a margin of 1700 votes. Surinder Goel won by margin of 800 votes.

This year for the first time the DUSU elections were held under

the model code of conduct imposed by election commission of DUSU. It meant ban on posters, banners, hoardings; not allowing more than two vehicles for each candidate for campaign, the expenditure not to cross the 10000 rupees mark. A ban on using loud speakers was also included in the code of conduct.

Deliberately as sheer electoral politics, the NSUI fielded two girls for its President and Joint Secretary posts to get elected with their 'Charisma' as it has been for the past few years. However their dreams did not come true they had to be

satisfied with one post of Joint Secretary. By appealing to the student community to elect their representatives on the basis of their performance not on the basis of 'Charisma', ABVP successfully thwarted the attempts of the NSUI.

ABVP's Presidential candidate Rekha Jindal had been a secretary in the last DUSU. The Vice-President, Secretary candidates also were office bearers of their college student unions. Setting to rest all speculations, ABVP made a clean sweep in DUSU. This has obviously shown the saffron hold over the DUSU student community.



# JANAKALYAN SAHAKARI BANK LTD.

140, Vivek Darshan, Sindhi Society, Chembur, Mumbai - 400 071  
Tel. 522 25 82 • 522 83 20 • Fax. 523 02 66

## BRANCHES

- Andheri (W) • Antop Hill • Bhandup • Chembur • Dadar  
• Ghatkopar
- Juhu • Kannmwar Nagar • Khar • Mulund (W)
- Mulund (E.) • Sahar • Sion • Vikhroli • Malad  
and
- Extension Counter at Chembur

Deposits : Rs. 181 Crores

Advances : Rs. 118 Crores

## Our Salient Features

- ☆ First bank in India to introduce Non-Stop Business Hours from 8 a.m. to 8 p.m.
- ☆ Rank amongst 1st 30 Urban Banks in the country.
- ☆ Computerisation in Bank's working with convenient Morning-Evening hours.
- ☆ We pay 1% additional interest on deposits of Co-Operative Societies.
- ☆ Safe Deposit Locker facility available.

## BOARD OF DIRECTORS

Shri V.P. Goyal  
Chairman

Shri V.R. Patwardhan  
Vice Chairman

## DIRECTORS

Shri B.L. Boolani, Shri H.K. Dhruv, Shri R.R. Gehani,  
Ms. G.B. Gunde, Shri C.N. Jagtap, Shri V.V. Girkar  
Shri R.P. Mishra, Dr. L.L. Oswal, Shri T.P. Sawant,  
Mrs. B.V. Vaidya, Shri R.G. Ketkar (Staff)

Shri S.K. Marathe  
General Manager

Shri N.D. Behere  
Dy. General Manager



## CELLULOID PATRIOTISM

Imagine this scene: a jam-packed cinema theatre screening a dubbed regional movie. On screen, the hero sees the tricolour being burnt, he runs and rolls over the flag, trying to put the fire out. In the background, a song plays- "Bharat humko jaan se pyaara hai". Moved, the crowd rises up to give the scene a standing

'ROJA' came as a surprise to the movie barons and film critics alike. Despite its patriotic theme, the film was a money-spinner at the box-office. The subject was controversial and explosive. The scenes with patriotic overtones were spontaneously appreciated by cine-goers. As the dust settled, critics dismissed the success of 'Roja'

lone man's desperate struggle to eliminate the traitors of the country. The popularity of the movie cut across all lines. Vyankatram the carnatic music lover from Tanjore Tamil Nadu appreciated it as much as Maria D'souza from Goa who is glued to the 'V' channel. Cassettes with Nana's dialogues sold like hot cakes. He became a cult hero



Scene from 'Sazaa-E-Kalapani'

ovation.

The film?... **'ROJA'** Ace-director **Manirathnam's** patriotic love-story set in the exotic locales of Kashmir with foot-tapping music score by wunderkid A. R. Rahman.

as a fluke. They were forced to eat their words when **'Krantiveer'**, a commercial Hindi movie starring the inimitable Nana Patekar ran to packed houses. The story was about communal violence and a

overnight.

Closely following on the heels of **'Krantiveer'** was **'Bombay'**. This film dealt with another burning issue, the communal carnage in Mumbai. The film was released in the wake of the



actual riots. It brought back vivid memories of a riot-torn city and the mindless violence in the name of religion. More important the audience could identify with the message of communal amity driven home by the films' lead pair. '1942 A Love Story' a film by debutant director Vidhu Vinod Chopra was set in the back-ground of the 'Quit India' movement. Again an out-and out commercial movie. The primary focus. The thrilling climax struggle. The film won critical acclaim and also ran well at the box-office.

'Prahaar', Nana Patekar's directorial venture may not have reaped rewards at the box-office but it was well received by the masses. The film dealt with several crucial issues like the flagging morale of our defence, services, the attitude of impotent indifference amongst the people, and the need to infuse the ideals of strength and courage among today's youth.

'Hindustani' today's biggest block buster highlights corruption, nepotism in high places, the criminal-politician nexus and a lone man's war against all those who denude his country of its riches. "Sazaa-E-Kalapaani" a recent release has bagged 4 national awards besides being screened in several international film-festivals. Painstakingly researched, this movie chronicles the inhuman tortures inflicted upon Indian freedom-fighters in the

**Cellular Jail the Andamans.** Many of these freedom-fighters died before they could see the realization of their cherished goal, the freedom of their motherland.

Are these films just isolated successes or can we see that there is a trend of patriotic movies? The answer is an emphatic "Yes". All these films have a strong patriotic message and all of them have been successful at the box-office upto a certain degree. This means that the concepts of patriotism and nationalism have gone down well with the masses. To use a corporate term, **patriotism has a "market value"**.

Why this recent upsurge of patriotism in films? To answer this question one must analyze the sociopolitical changes in our media. It is generally said that art imitates life. **Films are indicators of social moods. They reflect the hopes and despairs, the agonies and ecstasies of the common man.** The dishonest cop, the corrupt 'netaji', the scheming lawyer, the sleazy bureaucrat, the mafia don-are these characters mere figments of imagination? Not at all. They are very much rooted in reality which stares out at us everyday from the front pages of our newspapers.

The country is going through turbulent times. Corruption, criminalization of politics, moral degeneration,

spiritual bankruptcy, mental slavery and separatism are but a few faces of the many-headed Hydra which threatens to stifle our national character in its tentacles.

Films like Roja, Hindustani, Prahaar, etc., offer us a way out.... it may be just intellectual escapism or wayward fantasies but then don't all ideas originate from imagination? At least they try to reinforce the long-forgotten ideals of nationalism, integrity and love for one's motherland. **The success of these films at the box-office substantiates the need for such values today and also the fact that such ideals do have a popular mass-base.**

Well, What does the future hold for films such as these. Is this trend going to last?....or will it die down?... or is it only a knee-jerk reaction.. or is patriotism being 'marketed' like soaps and toothpaste.. Questions are many. Only time can give the answer. But if you ask me- critics may argue and cynics may whine but patriotism in film is here to stay.

**Ashish Chavan.**

## "Sorry"

Due to unavoidable circumstances we are not able to print perspective and state scene in this issue.

-Editor



## ABVP Opposes Miss World Pageant.

The ABVP has decided to stoutly oppose the 'MISS WORLD 1996 PAGEANT' sponsored by ABCL, scheduled for November 1996, in Bangalore.

The pageant has been under fire already from various women's organisations and socio-political outfits. "The ABVP sees such unethical pageants as cultural invasion and ugly symbols of commercialisation of women's beauty", stated Mr. Geeta Gunde, All India Vice President, ABVP, firmly while commenting on the ABVP's stand. Ms. Gunde was of the opinion that such pageants that are telecast live, reach households all over India, leading to serious problems of moral erosion. At the press conference in Cochin, Kerala, the ABVP National Organising Secretary, Shri. H. Dattatraya declared, "The time has come to say 'enough is enough' stand up to stop this blatant exploitation of women." Meanwhile ABVP National Secretary, Ms. Shweeta Kaul, DUSU president Ms. Rekha Jindal, Delhi state secretary, Ms. Vandana Mishra, reiterated the ABVP's strong opposition for the pageant at a press conference



ABVP & Rashtra Sevika Samiti members rushing towards Vidhan Sabha, breaking the police cordon, in protest against the Miss World Contest in Bangalore

held in Delhi. They demanded that the Prime Minister drop his plan to host a banquet for the participants of the Miss World. The ABVP is to canvas support for the opposition of the pageant from other organisations.

A state-wide protest was held in Karnataka by the ABVP against the proposed pageant. College bandhs in various places, including Bangalore, Gulbarga, Mysore were supported tremendously by the students. Effigies of Amitabh Bacchan Karnataka Chief Minister, J.H. Patel, were burnt down at numerous demonstrations. Female activists

of ABVP, Rashtra Sevika Samiti marched on to the Vidhan Sabha building in Bangalore on 20th September 1996 despite heavy police security.

The ABVP has sent letters, to embassies of 90 countries whose participants are expected appealing them to advise their respective countries to stop their representatives from participating in the pageant.

The leader of the Rayat Sangh Nanjudaswamy, has also expressed his desire to join the agitation against the tremendous onslaught on the Indian values.